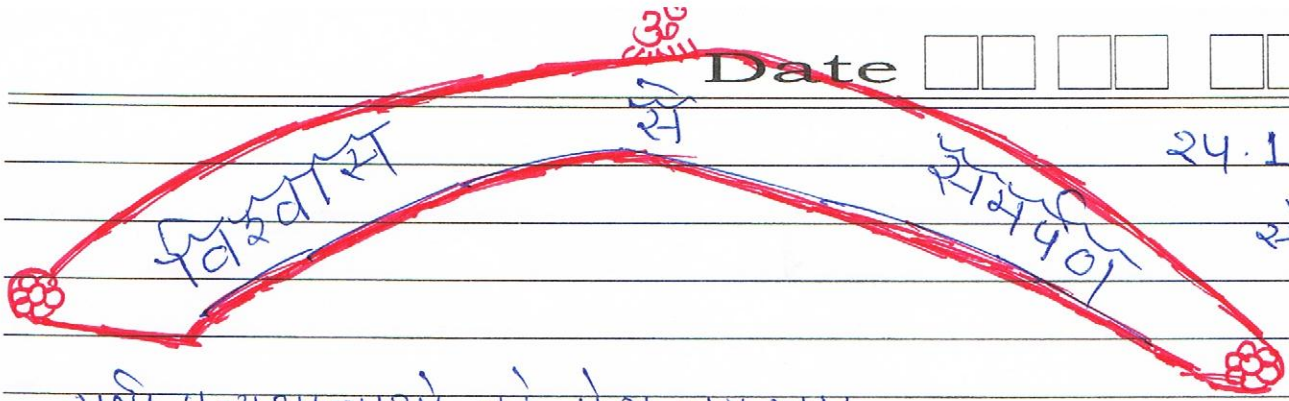

Date

24.1.2011
सोमवार

सभी पुण्यआत्माओं को मेरा नमस्कार - - -

इस गहन ध्यान अनुष्ठान के दौरान मैं आपके एकदम करीब होता हुं। और इसी कारण इन 45 दिनों में मुझे वह बातें समझ पाती है, जो 320 दिनों में नहीं समझ पाती है। और मुझे तो लगता 365 दिन ही मैं आपके करीब होता हुं। लेकिन आप का ध्यान मेरी ओर नहीं होता आप का ध्यान इन 45 दिनों में ही अधीक मेरी ओर होता है, और यही कारण है, आप के भितर मैं अपने आप को महसुस कर रहा हुं। एक प्रकार की आत्मीयता का अनुभव हो रहा है, और इसी कारण आपको समझने का आपको जानने का अवसर मिल रहा है। और अब आगे जो लिख रहा हुं। वह आप को संपुर्ण जानकर ही लिख रहा हुं, यह सब आपके लिये ही बता रहा हुं। अब यह मत समझना मैं किसी और के लिये यह कह रहा हुं, 'अब आँखे बंन्द कर के अपना आत्म परिक्षण करो' यह मैंने क्यों कहा क्योंकी यह 2011 "आत्म जागृती" का वर्ष है, इस वर्ष में ही सामुहीक शक्ती के साथ "आत्मचिन्तन" कर सकते है, और "आत्मचिंन्तन" से ही "आत्मजागृती" संभव है, पिछले दसवर्ष में नहीं हुआ इतना महान गुरुकार्य इस वर्ष होने वाला है, क्या उस कार्य को संभालने के लिये हम "जागृत" है, क्योंकी गुरुकृपा से उच्च शिखर पर पंहुचा जा सकता है। लेकिन उच्च शिखर पर बने रहने के लिये संपुर्ण समर्पण आवश्यक है। और संपुर्ण समर्पण का भाव बीना "आत्मजागृती" के संभव नहीं है, इस लिये आत्मजागृती के लिये आईये हम-सब मिल कर आत्मचिन्तन करे, अपने आप को जाने की हम कहाँ खडे है, और आगे हमे कहाँ जाना है, और हमारे "समर्पण" की स्थिती क्या-है।

आज का युग बुद्धी का युग है, और इसी कारण वातावरण मे एक प्रकार का "असंतुलन" प्रतीत होता है, क्रिया शक्ती अत्याधीक कार्यशील है, और भावनाएं कम हो रही है, और इसी कारण वातावरण मे हमारे आसपास एक प्रकार की "हडबड" है, "अशान्ती" है, सब काम की जल्दी है, सभी लोग सब कुछ अतीशिघ्र पा लेना चाहते है, यह अतीशिघ्रता ही हमे "असंतुलीत" कर रही है, हमारे शरीर को एक ओर रोगग्रस्त कर रही है, और दुसरी ओर चित को चंचल कर रही है, चित्त की चंचलता चित्त को कमजोर कर रही है।

इस कमजोर चंचल चित्त के कारण वह सदैव आसपास के वातावरण से ही प्रभावीत रहता है, चंचल चित्त सदैव भौतिक वस्तुओ पर ही होता है, हम इससे अलग कुछ सोच भी नही पाते हमारे सारे विचार इस नाशवान शरीर के आसपास ही रहते है, शरीर की समस्या, सुख सुविधाओ की समस्या या बिमारी की समस्या, रिश्तो की समस्या, भोजन की समस्या, अंहकार की समस्या, शरीर के रुप की समस्या, शरीर के स्वरुप की समस्या, भविष्य की समस्या, भुतकाल की समस्या, याने घुम फिर कर चित केवल शरीर के आसपास ही अशाश्वत बातो पर ही रहता है, और चित्त नष्ट होते रहता है, हम जिवन मे सबकुछ एकदम आसानी से बीना समय गंवाये बीना "परिश्रम" के पाना चाहते है, सब की हडबड हमे है, क्यो? आप अपने आप को प्रश्न करो यह जल्दी पाने की चाह आपको "अतृप्ती" निर्माण कर रही है, एक बात पाने के बाद रुकते हो क्या नही दुसरी बात के पिछे दौडना प्रारंभ कर देते हो, और जिवन भर दौडते ही रहते हो, और पिछले दस साल से दौड ही रहे हो, कभी सोचा है, "कहाँ जाना है, कहाँ पहुचना है, मंझील कहा है, ?" कुछ भी पता नही बस दौड रहे हो और तुमको सामुहीकता मे दौडना देखकर बाकी जिन्हे दौडने की कोई आवश्यकता ही नही है, वे भी दौड रहे है, उन्हे पुछता हु, क्यो तुम दौड रहे हो तो वे कहते है, की सभी दौड रहे है, इस लीये मै भी दौड रहा हु,

"तुम्हारा अन्त हो जायेगा लेकीन इस अन्धी दौड का कोई अंत नही है," यह सब बाते कहने का "गहन ध्यान अनुष्ठान" ही सही समय क्योकी बाकी 320 दिन तो यह सुनने के लिये भी तुम मुझे खडे नही मिलते हो, सदैव दौडते ही रहते हो।

अब यह दौडना बंन्द करो और शांन्त चित्त से देखो तुम कौनसे विचार करते हो तो पाओगे 90% वीचार बेकार के ही है। जिनका आज के "वर्तमान" से कोई संमन्ध नही है, और इन विचारो से ही तुम तुम्हारी आध्यात्मीक स्थिती जान सकते हो सदैव तुम्हे प्रश्न रहता तुम्हारी "आध्यात्मीक स्थिती" कैसी है, यह प्रश्न ही अपने आप मे "मैं" के अंहकार का प्रतीक है, याने अभी भी आपने आपका अस्तीत्व अपने गुरु से अलग बना कर रखा है, अभी भी आप मान रहे हो आप सामुहीकता से अलग हो "गुरु और सामुहीक शक्ती" एक ही सिक्के के दो पहलु है, क्योकी गुरु सामुहीकता से और सामुहीकता गुरु से जुडी हुयी है, वह स्थुल मे अलग लगते है। अलग है नही, इस विचारो के प्रदुषण वाले समाज मे आध्यात्मीक प्रगती का मार्ग केवल और केवल सामुहीकता मे ही है, क्योकी यह वैचारीक प्रदुषण, एक मनुष्य को कभी आध्यात्मीक प्रगती करने ही नही देगा,

दुसरा तुम्हारी इच्छा और आंकाक्षा का निरीक्षण करो उससे भी तुम्हे तुम्हारी स्थिती पता लगेगी अरे बाबा प्रत्येक "श्री गुरुशक्ती धाम" तो एक जिवंन्त "कल्पवृक्ष" है, आप जो भी इच्छा करो व पुर्ण होगी लेकीन प्रश्न है। आप क्या मांगते हो और आप क्या मांग सकते हो तुम्हारी मांग ही अशाश्वत होती है, कभी तो अपने स्वयम के उत्थान (आत्मा) के लीये मांगकर देखो सदैव मांगने मे भी जल्दी होती है, सभी चिजे फटाफट चाहीये "सब्र" तो है ही नही इस लिये सदैव याद रखो "सब्र का फल बडा मीठा होता है," परीस्थीती से घबराओ मत परीस्थीतीया कभी स्थायी नही होती है, ये भी परीस्थीती चली जायेगी कुछ बुरा होने वाला नही है, सब कुछ अंन्त मे अच्छा

ही होगा। विश्वास करो, यह विश्वास की तुम्हारे मे कमी है। इसी लिये मुसीबतो को तुम आमन्त्रित करते रहते हो। सोचो क्या लेकर आये थे और अन्त मे क्या लेकर जाओगे, "खाली हाथ आये थे खाली हाथ जाओगे,"

अरे बाबा अचानक अनायास प्राप्त वस्तु कभी हजम नही होती वह वस्तु मांगने के पुर्व अपने हाजमा तो ठीक करो, जिवन मे भी एकदम उंचाई प्राप्त होने पर गिरने का खतरा बना रहता है, "तुम्हे उंचाई दिखती है। मुझे गिरना दिखता है," क्योकी उंचाई पर टिके रहने की तुम्हारी स्थिती ही नही है, इस लीये सब्र करो "सब्र" तुम्हे उंचाई पर पहुचाने की तुमसे अधीक मुझे जल्दी है, लेकीन मुझे चिन्ता तुम्हारे को उंचाई पर टिके रहने की है, इसी लीये कहता हु, सब्र रखो सब समय आने पर हो जायेगा, और "विश्वास" पुर्ण रखो यह विश्वास ही उंचाई पर रहने की शक्ती प्रदान करेगा,

क्योकी यह मांगने की प्रवृत्ती तुम्हारे मे एक ओर अतृप्ती पैदा कर रही है, और एक बार यह अतृप्ती का स्वभाव हो गया तो इस "और और का कोई छोर" नही है। इस का कोई अन्त नही है, इससे अच्छा है। आप वह मार्ग अपनाओ जो मैने मेरे जिवन मे अपनाया है। मैने गुरुशक्तीयो से कभी भी कुछ नही मांगा न अपने लिये और न तो आपके लिये मै सदैव कहता हु, "गुरुदेव आपकी इच्छा मे हो आप की कृपा मे हो आपकी करुणा मे हो आप के सानीध्य मे हो" क्या हो उसको महत्व नही है। "गुरु सानीध्य" महत्वपुर्ण होना है) आप भी मुंह से ऐसा कहते हो लेकीन वह केवल बाहरी होना है, अन्दर से यह होना ही चाहीये ऐसी इच्छा होनी है, समय बीतते जा रहा है, उम्र बढती जा रही है, अब तो यह मांगना छोड दो, हा मै मानता हु, "प्रार्थना" करने से समस्या के समय शांती मीलती है, लेकीन प्रथम सोचो यह समस्या आयी ही क्यो, क्योकी

मैं ध्यान नहीं करता था, ध्यान नहीं करता था इस लीये गुरुशक्तीयो को जुडा नहीं था और जुडा नहीं था अलग था इस लीये "समस्या" का शिकार हो गया, इस प्रार्थना करो लेकीन एकदम शॉन्त चित्त हो कर सपुर्ण विश्वास के साथ की गुरुदेव मेरी प्रार्थना सुनेगे ही और कहो "गुरुदेव मेरे जिवन मे यह समस्या आयी है, और इस समस्या का समाधान आपकी कृपा मे हो आपकी इच्छानुसार हो और आपकी इच्छा सर्वोपरी है, आपका निर्णय मुझे सपुर्णतह मान्य है," केवल ऐसा कहो मत- ऐसा "मानो" भी वह अधीक महत्वपुर्ण है
ऐसा करोगे तो समस्या का निदान भी हो जायेगा और अतृप्ती का भाव भी नहीं आयेगा. और एक समस्या के समाप्त होने के बाद जिवन मे दुसरी समस्या आयेगी भी नहीं,
वास्तव मे "गुरुमार्गी" को कभी कोई समस्या आ ही नहीं सकती है, क्योकी गुरु के रुप मे एक बडी सामुहीकता का "कवच" उसे प्राप्त होता है, बशर्ते की आप समस्या मे चित्त डालकर उसे आमंत्रीत न करे, इस लिये वातावरण मे फैल रही "गुलाब की सुगन्ध" महसुस करना हो तो प्रथम अपना चित्त समस्या रहीत किजीये, "गुलाब की सुगन्ध" का जिक्र मैने मेरे संदेश मे इस लिये कीया था ताकी जो गुलाब की सुगन्ध अनुभव कर रहा साधक यह न समझे की मेरी स्थिती बडी अच्छी है, और यह सुगन्ध केवल मुझे ही आ रही है, यह "अंहकार" उसे न हो इसी लीये बताया था की तुझे ही केवल नहीं, आ रही है, सभी साधको को आ रही है,
"गुलाब की सुगन्ध" तो गुरुशक्तीयो की कृपा प्रसाद है, यह सभी के लिये समानरुप से है,
"बस प्रसाद लेने के लीये हृदय खुला होना चाहीये, और क्या ?"

और ह्रदय खुला होने के लीये वह खाली समस्या रहीत होना आवश्यक है। बीना सपुर्ण विश्वास के "समर्पण" संभव नही है। और "क्षणीक समर्पण से क्षणीक अनुभुती संभव है।" यह अनुभुती ही इस बात का साक्षात प्रमाण है। की जिसे परमेश्वर कहते है। उस विश्वचेतना से आपका क्षणीक क्यो न हो सम्पर्क स्थापीत हो गया है।

अब इस "एक क्षण" को ही विश्वास से वृद्धीगत करना होता है। और जब यह "एक क्षण" वृद्धीगत होता है, तो समर्पण करना नही पडता समर्पण हो जाता है, संपुर्ण विश्वास से ही संपुर्ण समर्पण संभव है, और सपुर्ण समर्पण हो जाने पर जिवन मे मांगने के लिये कुछ नही रहता क्योकी जो आवश्यकता है। वह बिन मांगे ही पुर्ण हो जाती है, और जो अनावश्यक है। उसे मांगने की इच्छा ही नही होती है। "तुका म्हणे उमे राहावे जे जे होईल ते ते पाहावे" वाली स्थिती हो जाती है,

इस एक क्षण की अनुभुती से ही विश्व के अलग देशो की पवीत्र आत्मारे इस समर्पण ध्यान से जुडी है। उनके पुर्व जन्म के कर्मो के कारण ही इस जिवन मे उन्हे यह "ईश्वरीय अनुभुती" प्राप्त हुयी है, आप का साक्षात परमेश्वर की विश्व चेतना से सम्पर्क हो गया है, पहले शांन्त हो, इसका एहसास करो। तो आपको पता चलेगा की अब मांगने की नही बल्की "ईश्वरीय अनुभुती" से जुडने की प्रार्थना करना है, अब इतना स्पष्ट बताने के बाद तो आप अवश्य करोगे ही यह मुझे पुर्ण आप पर विश्वास है, यह "गहन ध्यान अनुष्ठान" "जाग्रती वर्ष" मे है। वह आप को आसपास के "मायाजाल" से जाग्रत अवश्य करेगा क्योकी इसके लीये आपके साथ लाखो आत्माओ की सामुहीकता इस और प्रयत्नशील है, आप बस उस पवीत्र आत्माओ की सामुहीकता मे शामील हो जाईये बस और क्या ?

आपका
बाबा स्वामी